आचार्य रविषेण विरचित

पद्मपुराण

(जैन रामायण)

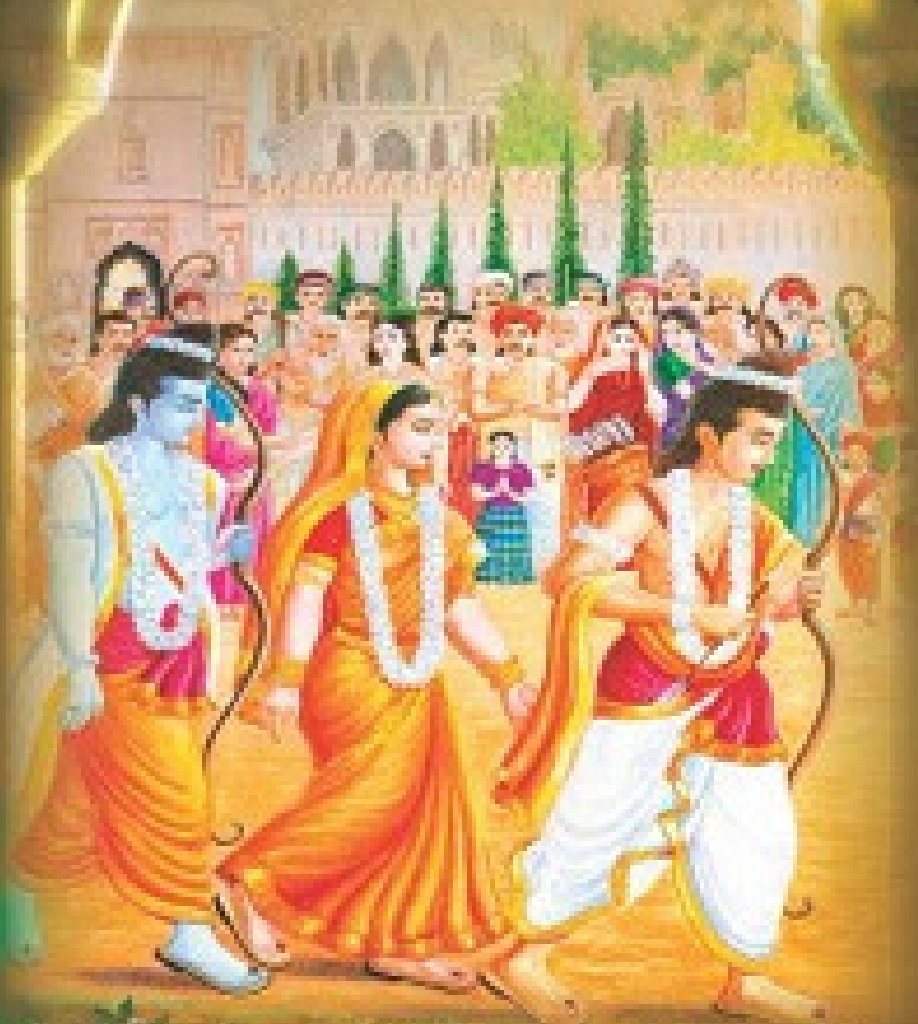

हिन्दी अनुवाद : डॉ० पं० पन्नालाल जैन 'साहित्याचार्य'

श्रीमद् रविषेणाचार्य प्रणीत

पद्मपुराण

(जैन रामायण)

हिन्दी अनुवाद

डॉ० पं० पन्नालाल जैन, साहित्याचार्य

प्रकाशक

धर्मोदय विद्यापीठ

सागर (मध्यप्रदेश)

ॐ

कृति	:	पद्मपुराण (जैन रामायण)
कृतिकार	:	आचार्य रविषेण
हिन्दी अनुवाद	:	डॉ॰ पं॰ पन्नालाल जैन, साहित्याचार्य
संस्करण	:	प्रथम, ९ अक्टूबर, २०१९
आवृत्ति	:	११००
मूल्य	:	३५०/-
प्राप्ति स्थान	:	धर्मोदय विद्यापीठ सागर (म. प्र.) ७५८२-९८६-२२२
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

मेरी बात

आचार्य रविषेण द्वारा ७ वीं शताब्दी में रचित संस्कृत भाषा में निबद्ध सर्वज्ञदेव राम के चरित्र का वर्णन करने वाला प्रथमानुयोग का महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। इस चरित की इतनी लोकप्रियता हुई कि प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, कन्नड़, तमिल, हिन्दी तथा अन्य सभी क्षेत्रीय भाषाओं एवं बोलियों में रचे गये हैं। यह ग्रन्थ सकल विद्याओं का आगार ग्रन्थ है। इसमें पुण्य-पाप, श्रावकाचार-श्रमणाचार, जैन संस्कृति, सिद्धान्त, राजनीति, लोकाचार, इतिहास, खगोल, भूगोल आदि का कोई ऐसा विषय नहीं, जिसका प्रतिपादन इस ग्रन्थ में न हो। इस ग्रन्थ के स्वाध्याय से सिद्धान्त और अध्यात्म का समीचीन बोध सहजता से हो जाता है। कहते हैं कि इस ग्रन्थ के अध्ययन से चारों अनुयोगों का स्वाध्याय हो जाता है।

जैन मान्यता के अनुसार राम का उत्पत्ति काल भगवान् मुनिसुव्रतनाथ के तीर्थकाल में माना जाता है। जैन कवियों ने राम तथा लक्ष्मण को त्रेसठ शलाका महापुरुषों के अन्तर्गत मानकर उनके चरित का निरूपण किया है।

भारतीय सांस्कृतिक परम्परा का दैदीप्यमान रूप में प्रकाशित करने वाली राम कथा भारतवर्ष की वर्तमान समय की सभी धार्मिक परम्पराओं में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। राम राज्य का आदर्श आज हमारी राष्ट्रीय परम्परा का लक्ष्य भी है। राम कथा की विश्वव्यापी जनप्रियता के कारण विश्व के सम्पूर्ण कथा साहित्य का अर्द्धाधिक भाग परम पुण्यात्मा राम कथा पर सम्बद्ध है।

पं० रतनलालजी जैन, इन्दौर ने इस ग्रन्थ का स्वाध्याय ३०० से भी अधिक बार किया है। उनका कहना है कि जितनी भी बार इस ग्रन्थ को पढ़ो, उतनी बार ग्रन्थ से नये-नये रहस्य और अनुभूति प्राप्त होती है।

ब्र० संजीव भैया, कटंगी की बार-बार प्रेरणा से इस ग्रन्थ का प्रकाशन हो पाया है। इसमें पाठकों की सुविधा की दृष्टि से राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त डॉ० पं० पन्नालालजी जैन, साहित्याचार्य द्वारा किए गये अनुवाद को ही यथावत् प्रकाशित किया है। पंडितजी के इस महनीय योगदान के लिए, उनकी लेखनी के लिए कोटिशः साधुवाद ज्ञापित करते हैं। साथ ही भारतीय ज्ञानपीठ के भी आभारी हैं, जो इस ग्रन्थ को मूल के साथ वर्षों से प्रकाशित करते आ रहे हैं।

इस ग्रन्थ में २६ चित्रों का समावेश किया है। जो 'जैन रामायण' नामक सचित्र ग्रन्थ से लिए गये हैं, उस ग्रन्थ के प्रकाशक बन्धुओं को कोटिशः धन्यवाद ज्ञापित करते हैं।

डॉ० ब्र० भरत जैन

भूमिका

मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर के काल में उत्पन्न नवमें बलभद्र श्रीराम अत्यन्त लोकप्रिय महापुरुष हुए। अयोध्या के राजा दशरथ की चार रानियाँ थीं, जिनके नाम अपराजिता (कौशल्या), सुमित्रा, केकया और सुप्रभा था। बड़ी रानी अपराजिता (कौशल्या) के राम (पद्म) नाम का पुत्र हुआ एवं शेष रानियों के क्रमशः लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न नाम के पुत्र हुए।

यौवनावस्था प्राप्त होने पर राम का विवाह राजा जनक की पुत्री सीता के साथ कर दिया गया। दीक्षा लेने की भावना होने पर, संसार-शरीर और भोगों से उदासीन राजा दशरथ ने अपने ज्येष्ठ पुत्र राजकुमार राम को राजगद्दी देनी चाही, पर केकया को दिए हुए वचन के कारण भरत को राजा बनाकर स्वयं ने सर्वभूतशरण्य मुनिराज से समस्त परिग्रह को त्याग कर दैगम्बरी दीक्षा धारण की। उधर राम, लक्ष्मण और सीता, राजा भरत के राज्य की सीमा से बहुत दूर जा दण्डक वन में रहने लगे।

बहुत काल व्यतीत होने पर एक दिन रावण नाम का विद्याधर सीता का रूप लावण्य देखकर मोहित हो गया एवं छल से उसने सीता का हरण कर लिया। पश्चात् सीता की खोज के लिए निकले राम की महिमा सुनकर हनुमान विद्याधर राम के पास पहुँचा। पश्चात् सुग्रीव, भामण्डल आदि अनेक विद्याधर राजाओं के साथ राम-लक्ष्मण सेना सहित आकाश मार्ग से लंका पहुँचे। वहाँ रावण का छोटा भाई विभीषण भी अधर्म का साथ छोड़कर राम के साथ आ मिला। राम और रावण की सेना के बीच कई दिनों तक भयंकर युद्ध चला। अन्त में रावण ने चक्ररत्न चला दिया तो वह तीन प्रदक्षिणा दे चक्ररत्न लक्ष्मण के हाथ में आ जाता है एवं लक्ष्मण नारायण घोषित होते हैं और उसी चक्ररत्न से रावण (प्रतिनारायण) का वध कर देते हैं। तदनन्तर विभीषण को लंका का राज्य सौंपकर, कुछ दिन विभीषण के आतिथ्य में रहकर, पश्चात् राम, लक्ष्मण और सीता वापस अयोध्या नगर में आ जाते हैं।

राजा भरत पूर्व में वैराग्य भाव को धारण किए हुए उदासीन भाव से राजपाट सम्हाल रहे थे। रामचन्द्रजी के वापस आते ही, राम को राजा बनाकर स्वयं दिगम्बर दीक्षा धारण करते हैं। कालान्तर में सीता के विषय में लोकापवाद होने पर, कुल मर्यादा की रक्षा हेतु राम, गर्भवती सीता का परित्याग कर देते हैं तथा तीर्थयात्रा के दोहले को पूर्ण करने के बहाने कृतान्तवक्र सेनापति के द्वारा जंगल में छुड़वा देते हैं तब कृतान्तवक्र ने सीताजी से कहा माँ! रामचन्द्रजी से कोई संदेश कहना है क्या? तब सीता ने कहा ''जिस प्रकार प्रजा के कहने पर मुझे छोड़ दिया, उसी प्रकार किसी के कहने पर धर्म को नहीं छोड़ना।'' अथानन्तर पुण्य योग से सीता के समीप विद्याधर राजा वज्रजंघ जंगल में पहुँचा एवं सीता को बहन बनाकर अपने महल में ले जाता है। वहीं सीता ने अनंगलवण और मदनांकुश नामक युगल पुत्रों को जन्म दिया।

सिद्धार्थ नामक क्षुल्लक से शिक्षा प्राप्त कर बड़े हुए उन पुत्रों को जब अपनी माँ की पूरी कहानी पता चली तो उन्होंने युद्ध हेतु अयोध्या नगरी को घेर लिया। घोर युद्ध हुआ जब राम सेना सहित उन पुत्रों को न जीत सके तब सिद्धार्थ क्षुल्लक ने राम-लक्ष्मण से उनका रहस्य प्रकट किया। तब उन्होंने युद्ध को छोड़कर पुत्रों को पुकारा और वे पिता-पुत्र आपस में प्रीति को प्राप्त हुए।

समस्त लोगों के समक्ष निर्दोषता सिद्ध करने की शर्त पर राम ने सीता को बुलाया और उनकी अग्नि परीक्षा ली तब अग्निकुण्ड जलकुण्ड बन गया और देवताओं ने सीताजी को सिंहासन पर बैठाकर जय-जयकार किया। परीक्षा में निर्दोष सिद्ध होने पर राम ने सीता से राजमहल में चलने का आग्रह किया, परन्तु सीता ने कहा अब मैं भवन की ओर नहीं किन्तु वन की ओर जाऊँगी और आत्मकल्याण करूँगी। तब राम की आज्ञा ले सीता ने पृथ्वीमती आर्यिका से आर्यिका के व्रतों को अंगीकार किया एवं स्त्री पर्याय के छेदन हेतु घोर तप करने लगी। तपस्या करते हुए आयु को निकट जान तैंतीस दिन की सल्लेखना धारण कर समाधिमरण को प्राप्त हो अच्युत स्वर्ग में स्त्री पर्याय से छूट पुरुष पर्याय में प्रतीन्द्र हो गयी।

एक दिन भ्रातृ प्रेम की परीक्षा करने आये देवों के द्वारा ऐसा कहने पर कि राम की मृत्यु हो गई सुनते ही लक्ष्मण मरण को प्राप्त हो जाते हैं। राम मोह के वशीभूत हो उनके शव को अपने कंधे पर लटकाये छह माह तक पागलों की भाँति भटकते रहे। तदनन्तर देवों के द्वारा अनेक प्रकार से सम्बोधने पर प्रतिबोध को प्राप्त हो, अनंग लवण के पुत्र को राज्य सौंपकर राम ने निर्ग्रन्थ दीक्षा धारण की। घोर तप करते हुए माघ शुक्ल द्वादशी को श्रीराम मुनि ने केवलज्ञान प्राप्त किया एवं आयु कर्म के पूर्ण होने पर अष्ट कर्मों को क्षय कर मांगीतुंगी से निर्वाण को प्राप्त किया।

राम चरित्र के कुछ महत्त्वपूर्ण बिन्दु इस प्रकार हैं–

१. रावण राक्षस नहीं था अपितु रावण का जन्म राक्षस वंश में हुआ था। वह विद्याधर तीन खण्ड का स्वामी, अत्यन्त रूपवान, नीति का ज्ञाता विद्वान् था। रावण के बचपन का नाम दशानन था।

२. कुम्भकर्ण की बुद्धि सदा धर्म में लीन रहती थी, वह शूरवीर था, कलाओं में निपुण, पवित्र भोजन करने वाला तथा शयनकाल में ही निद्रा लेने वाला था। रावण की मृत्यु के पश्चात् अनन्तवीर्य केवली के समक्ष मुनि दीक्षा अंगीकार की एवं चूलगिरि पर्वत (बावनगजा) से मोक्ष प्राप्त किया।

३. विभीषण ने राम के साथ मुनि दीक्षा धारण की। रावण की बहन चन्द्रनखा एवं पत्नि मंदोदरी ने शशिकान्ता आर्यिका से दीक्षा ग्रहण की।

४. हनुमान बन्दर नहीं सुन्दर महापुरुष वानरवंश के शिरोमणि तद्भव मोक्षगामी थे। अंजना का मामा प्रतिसूर्य जब बालक को अपने निवास हनुरुह द्वीप ले जा रहा था तब बालक विमान से उछलकर नीचे शिला पर गिर पड़ा, जिस शिला पर बालक गिरा वह शिला चूर-चूर हो गई, संभवतः इसलिए उनका एक नाम 'वज्रांग' (बजरंग) पड़ा हो। शैल

(पर्वत) की गुफा में जन्म लेने के कारण उनका नामकरण 'श्रीशैल' किया गया, पिता पवनंजय के कारण 'पवनपुत्र' भी कहा जाता है। हनुरुह द्वीप में पालन-पोषण होने से लोक में हनुमान नाम प्रसिद्ध हुआ। इनके शरीर की समस्त क्रियाएँ मनुष्यों के समान ही थीं। वे अत्यन्त सुन्दर, कांति के धारक, कामदेव थे। उन्होंने मुनिदीक्षा धारण की एवं मांगीतुंगी से मोक्ष प्राप्त किया।

५. राजा जनक की रानी विदेहा के गर्भ से एक साथ पुत्र और पुत्री का जन्म हुआ। पुत्र का नाम भामण्डल एवं पुत्री का नाम सीता रखा गया।

६. कर्णरवा नदी के तट पर राम-सीता ने चारण-ऋद्धिधारी मुनियुगल सुगुप्ति और गुप्ति मुनियों को आहारदान दिया। तभी देवों द्वारा पंचाश्चर्य किए गए। उसी समय एक गिद्ध पक्षी आया और मुनि के चरणोदक में लोटने लगा। उस चरणोदक के प्रभाव से उसका शरीर रत्नों की कांति के समान उज्ज्वल एवं पंख सुवर्ण के समान हो गये। उस गिद्ध पक्षी ने मुनिराज के उपदेश से श्रावक के व्रतों को स्वीकार किया एवं राम लक्ष्मण के साथ रहने लगा। चूँकि उसके शरीर पर रत्न तथा स्वर्ण निर्मित किरण रूपी जटाएँ सुशोभित होती थीं, अतः राम आदि उसे जटायु नाम से पुकारते थे।

७. जब लक्ष्मण रावण के द्वारा अदृश्य शक्ति से मूर्च्छित कर दिए गए थे तब राजकुमारी विशल्या के समीप लाने पर स्वस्थ्य हो गए और वह शक्ति भाग गई। पश्चात् लक्ष्मण से विशल्या का विवाह कर दिया गया।

८. रावण-मंदोदरी के पुत्र इन्द्रजित् और मेघवाहन ने रावण वध के बाद अनन्तवीर्य महामुनि के पास दीक्षा ली और अंत में केवलज्ञान प्राप्त कर मोक्ष गए।

९. श्री रामचन्द्रजी की आयु १७,००० वर्ष की थी एवं शरीर की ऊँचाई सोलह धनुष (६४ हाथ=९६ फीट) प्रमाण थी। त्रिखण्डाधिपति लक्ष्मण की आयु १२,००० वर्ष की थी एवं शरीर की ऊँचाई सोलह धनुष (६४ हाथ=९६ फीट) प्रमाण थी।

१०. अनेक विद्याओं को धारण करने वाले, देवों के समान आकाश में गमन करने वाले, अनेक रूप धारण करने में सक्षम विद्याधर श्रेणी में रहने वाले मनुष्य विद्याधर कहलाते हैं, वे भी विद्याओं का त्याग कर मुनि बन सकते हैं एवं कर्म काट मुक्ति जा सकते हैं।

प्रकाशक

रामचरित्र का सार

रामचरित्र का सार क्या है? आचार्य रविषेण ने भी लगभग सातवीं-आठवीं शताब्दी में एक रामचरित्र रचा और कह दिया कि इस ग्रन्थ में राम और रावण का वर्णन किया गया है लेकिन एक का पतन हुआ और एक का ऊर्ध्व गमन हुआ। २६ हजार श्लोक प्रमाण वह रामायण है। बहुत सी रामायणें लिखी गई, आज लगभग १८ रामायणें उपलब्ध हैं। विदेशों में भी रामायण का प्रचलन हुआ। एक तिब्बत की रामायण है—रवेतानी। दक्षिण भारत में भी कम्ब रामायण है और उत्तर भारत में तो सबसे अधिक प्रचलन तुलसीदासजी कृत रामचरित मानस का है। इसके सिवाय बौद्ध धर्म में 'जातकदृवंदणा लंकावतार सूत्र' ऐसी रामायण प्रसिद्ध है। जैनशासन को मानने वालों में भी 'पउमचरिउ' 'पद्मपुराण' 'उत्तरपुराण की रामायण' इसके सिवाय रामचरित नाम का भी ग्रन्थ है। जैन रामायण में भगवान् राम के चार पुरुषार्थ दर्शाए गए हैं। चार आश्रमों की भारतीय संस्कृति में बड़ी अच्छी व्यवस्था है। देखिए चार की संख्या का कैसा संयोग है—राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न ये चार भाई थे। छब्बीस हजार श्लोक प्रमाण यह रामायण है और उसका प्रथम प्रकरण वैराग्य प्रकरण है, जहाँ पर श्री राम अपने गुरु वशिष्ठ से कहते हैं—

नाऽहं रामो मे न वांछा, भोगेएवऽपि न मे मनः।
शान्तिमस्यास्तु-मिच्छामि स्वात्मन्यवे जिनोयथा॥

मेरी किसी पदार्थ में वांछा नहीं है। सांसारिक सुख भोगों में मेरा मन नहीं जाता। मैं सिर्फ अपने अन्दर में शान्त हो जाना चाहता हूँ। जैसे जिनेन्द्र भगवान् शान्त हो गए हैं। जिनका अर्थ क्या है? ''जयति इति जिनः''! जो अंतरंग शत्रुओं को पराजित कर दे अर्थात् क्रोध, मान, माया, लोभ, मद उनको जो पराजित कर दे, वे जिन कहलाते हैं। वैसे तो भगवान् राम के चरित्र का एक मोटा-सा रूप भारत का हर व्यक्ति जानता है कि एक राम राजा दशरथ के बेटे और एक सीता राजा जनक की पुत्री थी। इनका विवाह सम्बन्ध हुआ और राजतिलक के समय भाग्य ऐसा पलटा कि राज्य भरत को मिला और राम अयोध्या छोड़कर चले गए। दण्डकारण्य में रावण ने सीता का हरण कर लिया। सुग्रीव राम से हनुमान का मिलाप हुआ। दूत के रूप में हनुमान को रावण के यहाँ भेजा फिर भी रावण टस से मस नहीं हुआ। हालांकि वह विद्वान् पंडित था, तीन खण्ड का स्वामी भी था लेकिन अन्ततः अहंकार ने उसे धराशायी कर दिया। राम नहीं चाहते थे कि मैं युद्ध करूँ। लेकिन उन्हें विवश होकर युद्ध करना पड़ा। फिर भी युद्ध हुआ और सत्य की विजय हुई। अद्भुत रामायण, आनन्द रामायण और अध्यात्म रामायण आज भी उपलब्ध होती हैं। आध्यात्म रामायण में लक्ष्मण गीता का एक श्लोक दिया है। लक्ष्मण गीता में एक श्लोक है-

सुखस्य दुःखस्य न कोऽपि दाता, अहं करोमि वृथाऽभिमानः।
परोददाति कुबुद्धिरेषा स्वकर्म सूत्रा गृथितोहिलोकः।

कोई किसी को दुःख या सुख दे नहीं सकता। यह विपरीत मान्यता है। व्यर्थ का अभिमान है और अन्तिम चरण में समाधान देते हुए कहते हैं—अपने-अपने कर्मों के अनुसार ही जगत् में प्राणियों को सुख-दुःख प्राप्त होता है।

आचार्य रविषेण और उनका पद्मपुराण

रविषेणाचार्य ऐसे कलाकार कवि हैं, जिन्होंने संस्कृत में लोकप्रिय पौराणिक चरितकाव्य का कथन किया है। पौराणिक चरितकाव्य-रचयिता के रूप में रविषेण का सारस्वताचार्यों में महत्त्वपूर्ण स्थान है।

जीवन-परिचय

आचार्य रविषेण किस संघ या गण-गच्छ के थे, इसका उल्लेख उनके ग्रन्थ 'पद्मचरित' में उपलब्ध नहीं होता। सेनान्त नाम ही इस बात का सूचक प्रतीत होता है कि ये सेनसंघ के आचार्य थे। पद्मचरित में निर्दिष्ट गुरु परम्परा से अवगत होता है कि इन्द्रसेन के शिष्य दिवाकरसेन थे और दिवाकरसेन के शिष्य अर्हत्सेन। इन अर्हत्सेन के शिष्य लक्ष्मणसेन हुए और लक्ष्मणसेन के शिष्य रविषेण।

यह 'पद्मचरित' सम्यग्दर्शन की शुद्धता के कारणों से श्रेष्ठ है, कल्याणकारी है, विस्तृत है, अत्यन्त स्पष्ट है, उत्कृष्ट है, निर्मल है, श्रीसम्पन्न है, रत्नत्रयरूप बोधि का दायक है तथा अद्‌भुत पराक्रमी पुण्यस्वरूप श्रीराम के माहात्म्य का उत्तम कीर्तन करने वाला है, ऐसा यह पुराण आत्मोपकार के इच्छुक विद्वज्जनों के द्वारा निरन्तर श्रवण करने योग्य है।

समय-निर्धारण

आचार्य रविषेण ने स्वयं अपने पद्मचरित की समाप्ति में समय का निर्देश किया है–

जिनसूर्य-भगवान् महावीर के निर्वाण प्राप्त करने के १२०३ वर्ष छह माह बीत जाने पर पद्ममुनि का यह चरित निबद्ध किया। इस प्रकार इसकी रचना वि. सं. ७३४ (ई. सन् ६७७) में पूर्ण हुई है। वीर निर्वाण सं. कार्तिक कृष्णा ३० वि. सं. ४६९ पूर्व से ही भगवान् महावीर के मोक्ष जाने की परम्परा प्रचलित है। इस तरह छह मास का समय और जोड़ देने पर वैशाख शुक्ल पक्ष वि. सं. ७३४ रचना-तिथि आती है।

रचना-परिचय और काव्य-प्रतिभा

पद्मचरित में पुराण और काव्य इन दोनों के लक्षण सम्मिलित हैं। विमलसूरिकृत प्राकृत पउमचरिउ का आधार रहने पर भी इसमें मौलिकता की कमी नहीं है। कथानक और विषयवस्तु में पर्याप्त परिवर्तन किया है। वस्तुतः इस ग्रन्थ का प्रणयन उस समय हुआ है जब संस्कृत में चरित-काव्यों की परम्परा का पूर्ण विकास नहीं हुआ था। इसमें वन, नदी, पर्वत, ग्राम, ऋतु-वर्णन, संध्या, सूर्योदय आदि का चित्रण महाकाव्य के समान ही किया गया है। कथा का आयाम पर्याप्त विस्तृत है। पद्म (राम) के कई जन्मों की कथा तथा उनके परिकर में निवास करने वाले सुग्रीव, विभीषण, हनुमान की जीवन-व्यापी कथा भी इस चरितकाव्य में सम्बद्ध है। कतिपय पात्रों के जीवन-आख्यान तो इतने विस्तृत आये हैं, जिससे उन्हें स्वतंत्र काव्य या पुराण भी कहा जा सकता है।

आधिकारिक कथावस्तु मुनि रामचन्द्रजी की है और अवान्तर या प्रासंगिक कथाएँ वानर-वंश या विद्याधर-वंश के आख्यान के रूप में आयीं हैं। इन दोनों वंशों का कवि ने बहुत विस्तृत वर्णन किया है। यही कारण है कि चरितकाव्य के समस्त गुण इस ग्रन्थ में समाविष्ट हैं। अंगीरूप में शान्त रस का परिपाक

हुआ है। शृंगार के संयोग और वियोग दोनों ही पक्ष सीता-अपहरण एवं राम-विवाह के अनन्तर घटित हुए हैं। करुण-रस के चित्रण में अभूतपूर्व सफलता मिली है। युद्ध में भाई-बंधुओं के काम आने पर कुटुम्बियों के विलाप पाषाण हृदय को भी द्रवीभूत करने में समर्थ है। वर्णनों के चित्रण में कवि को पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है। नर्मदा का रमणीय दृश्य अनेक उत्प्रेक्षाओं द्वारा चित्रित हुआ है। नर्मदा मधुर शब्द करने वाले नानापक्षियों के समूह के साथ वार्तालाप करती हुई सी प्रतीत होती है। फेन के समूह से वह हँसती हुई-सी मालूम पड़ती है। तरंगरूपी भृकुटी के विलास के कारण वह क्रुद्ध होती हुई नायिका-सी, आवर्तरूपी बुद्बुदों से युक्त नायिका की नाभि जैसी, विशाल तटों से युक्त स्थूल नितम्ब जैसी एवं निर्मल जल-वस्त्र जैसे प्रतीत होते थे।

इस ग्रन्थ में १२३ पर्व हैं। इसे छह खण्डों में विभक्त किया जा सकता है–

१. विद्याधरकाण्ड
२. जन्म और विवाहकाण्ड
३. वन-भ्रमण
४. सीता-हरण और उसका अन्वेषण
५. युद्ध
६. उत्तरचरित

संक्षिप्त कथावस्तु

भगवान महावीर के प्रथम गणधर गौतमस्वामी को नमस्कार कर, उनसे रामकथा जानने की इच्छा प्रकट करने पर, गौतमस्वामी ने यह रामकथा कही है।

कथारम्भ में १. विद्याधरलोक, २. राक्षसवंश, ३. वानरवंश, ४. सोमवंश, ५. सूर्यवंश और ६. इक्ष्वाकुवंश के वर्णन के पश्चात् कथास्रोत सरिता को वेगवती धारा के समान आगे बढ़ता है।

रावण का जन्म (७-८ पर्व)—राक्षसवंशी राजा रत्नश्रवा तथा महारानी केकसी को रावण, कुम्भकर्ण और विभीषण नामक तीन पुत्र एवं चन्द्रनखा नामक पुत्री का लाभ हुआ। ये चारों सन्तानें पैदा होते ही अपनी-अपनी प्रकृति के अनुसार अपनी-अपनी महत्ता का संकेत देने लगीं। रत्नश्रवा ने जन्म के समय ही रावण को दिव्य-हार से युक्त एवं मौलिक माला में प्रतिबिम्बित, उसके एक ही सिर के दश प्रतिबिम्ब दिखलाई पड़ने के कारण उसका नाम 'दशानन' रखा।

विद्यासिद्धि (८ वाँ पर्व) अपने मौसेरे भाई इन्द्र की विभूति का श्रवण कर उसे परास्त करने का लक्ष्य रखकर वे तीनों भाई विद्यासिद्धि हेतु घनघोर तपश्चरण करने लगे। अन्त में अपनी दृढ़ता एवं एकाग्रता और निर्मोहिता एवं निर्भीकता के कारण उन तीनों भाइयों ने अनेक विद्याओं को सिद्ध कर लिया। अपनी सफलता का प्रारम्भिक चरण मान वे तीनों भाई दिग्विजय की तैयारी करने लगे।

दक्षिण विजय (९-११ पर्व)—रथनूपुर का राजा इन्द्र अत्यन्त शक्तिशाली था। अतः उसे परास्त करने के उद्देश्य से इन्होंने आक्रमण की तैयारी की। रावण ने अपनी वीरता और कुशलता से इन्द्र के सहायक

यम, वरुण आदि को तो पहले ही परास्त कर दिया था। अब उसकी दृष्टि इन्द्र पर ही था। इन्द्र मानव होते हुए भी अपने लिये इन्द्र ही समझ रहा था। इसी कारण उसने प्रान्तीय शासकों को यम, वरुण, सोम आदि संज्ञाओं से अभिहित किया था। उसने कारागार की नरकसंज्ञा और अर्थमंत्री की कुबेरसंज्ञा अभिहित की थी। रावण ने समस्त साधनपूर्ण सेना लेकर किष्किन्धापुर के राजा बालि को अपमानित किया और उसके साधुभाई सुग्रीव को अपना मित्र बनाया।

रथनूपुर के चारों ओर मायामयी परकोटा बना हुआ था। उसकी रक्षा अनेक विद्याधरों के साथ नलकूवर करता था। यह परकोटा अभेद्य था। इसके भेदन का परिज्ञान नलकूवर की पत्नी को ज्ञात था और यह नारी रावण के रूप को देखते ही मोहित हो गयी। रावण ने झूठा आश्वासन देकर परकोटाभेदन का उपाय ज्ञात कर लिया और अन्त में विजय के पश्चात् नलकूवर को वहाँ का राजा नियुक्त कर उसकी पत्नी को माँ शब्द से सम्बोधित कर एवं पतिव्रता बने रहने का उपदेश दे, वहाँ से आगे बढ़ा। अनेक प्रकार से युद्ध होने के पश्चात् इन्द्र अपने मंत्रिमंडल सहित बंदी बना लिया गया, पर उसके पिता सहस्त्रशूर के अनुरोध पर रावण ने उसे मुक्त किया और अपनी महत्ता का उदाहरण प्रस्तुत किया।

हनुमान-जन्म (१५-१८ पर्व)

आदित्यपुर के राजा प्रहलाद के पुत्र पवनंजय का विवाह राजा महेन्द्र की पुत्री अंजना से हुआ। पवनंजय उसकी सुन्दरता से आकृष्ट होने पर भी, अंजना की एक सखी द्वारा अपनी निन्दा सुनकर वह अंजना से रुष्ट हो गया और विवाह हो जाने पर उसने अंजना का परित्याग कर दिया। जब पवनंजय रावण को किसी युद्ध में सहायता देने के लिये जा रहा था, तो उसका शिविर एक नदी के तट पर स्थित हुआ। यहाँ चकवा के वियोग में एक चकवी को विलाप करते देख, उसे अंजना की स्मृति हो आयी और अपने किये कार्यों पर पश्चाताप करने लगा। वह सेना को वहीं छोड़ रात्रि में ही अंजना के पास चला आया। प्रथम मिलन के फलस्वरूप अंजना गर्भवती हुई। पवनंजय प्रभात होने के पूर्व ही बिना किसी से कहे-सुने अंजना के भवन से चला गया। अंजना की सास तथा अन्य परिवार के व्यक्तियों ने जब उसके गर्भवती के चिह्न देखे, तो परिवार के अपवाद के भय से उन्होंने अंजना को घर से बाहर निकाल दिया। वह दर-दर भटकती हुई एक निर्जन वन में पहुँची। यहाँ उसने एक पुत्र को जन्म दिया। इसी समय आकाशमार्ग से राजा प्रतिसूर्य जा रहा था। उसने जब एक नारी का करुण चीत्कार सुना, तो उसका हृदय पिघल गया और नीचे आकर परिचय जानना चाहा। इस परिचय के क्रम में जब उसे यह मालूम हुआ कि यह उसकी भांजी है, तो उसे अपार हर्ष हुआ और उसे पुत्र सहित लेकर अपने घर हनुरुह द्वीप में चला आया। मार्ग में चलते हुए हनुमान अपने बाल्य-चांचल्य के कारण विमान से नीचे गिर पड़े, पर हनुमान को चोट न लगी और जिस शिला पर वे गिरे थे वह शिला चूर-चूर हो गयी। हनुरुह द्वीप में बालक के संस्कार सम्पन्न किये गये। इसी कारण इसका नाम 'हनुमान' रखा गया।

युद्ध में विजय प्राप्त करने के पश्चात् पवनंजय घर वापस लौटा, पर अंजना को न पाकर तथा उसके अपवाद को ज्ञातकर उसे अपार वेदना हुई। फलतः वह घर छोड़कर वन की खाक छानने चल दिया। वह वन-वन भटकता हुआ, वृक्ष और लताओं से अंजना का पता पूछता हुआ उन्मत्त की तरह भ्रमण करने

लगा। कुछ समय पश्चात् वह भ्रमण करता हुआ हनुरुह द्वीप पहुँचा और वहाँ अपनी पत्नी और पुत्र को देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ तथा सभी के साथ आदित्यपुर लौट आया।

चन्द्रनखा का विवाह खरदूषण नामक राक्षस के साथ हुआ और इस दम्पत्ति के शंबूक नामक पुत्र उत्पन्न हुआ।

राजा दशरथ का जन्म (१९-२१ पर्व)—इक्ष्वाकुवंश में अयोध्या के राजा अज के यहाँ दशरथ का जन्म हुआ। दशरथ का जन्म उत्तम नक्षत्र और उत्तम मुहूर्त में हुआ। फलस्वरूप यह जन्म से ही वीर, प्रतापी और यशस्वी था। इनकी तीन रानियाँ थीं।

(क) दर्पपुर के राजा की पुत्री अपराजिता या कौशल्या

(ख) पद्मपत्र नगर के राजा तिलबन्धु की पुत्री सुमित्रा

(ग) रत्नपुर के राजा की पुत्री सुप्रभा

एक दिन रावण को किसी से विदित हुआ कि उसकी मृत्यु राजा जनक और दशरथ की सन्तानों के द्वारा होगी। अतः रावण ने अपने भाई विभीषण को मिथिला नरेश जनक और अयोध्या नरेश दशरथ को मारने के लिए भेजा, पर विभीषण के आने के पूर्व ही नारद ने उन दोनों को सचेत कर दिया था। जिससे वे दोनों अपने-अपने भवनों में अपने-अपने अनुरूप कृत्रिम मूर्ति छोड़कर बाहर निकल गये। विभीषण ने इन पुतलों को ही सचमुच का जनक और दशरथ समझा और उन्हीं का मस्तक काटकर समुद्र में गिरा दिया तथा वापस लौटकर लंका में वैभवपूर्वक राज्य करने लगा।

राजा दथरथ की विजय एवं कैकेयी से परिणय (२१-२५ पर्व)—भ्रमण करते हुए राजा दशरथ अनेक सामन्तों के साथ केकय देश पहुँचे और वहाँ की राजपुत्री कैकेयी को स्वयंवर में जीत लिया। स्वयंवर में समागत राजाओं ने इन्हें अज्ञात कुलशील समझकर इनको युद्ध करने का निमन्त्रण दिया। दशरथ ने रणभूमि में उतरकर वीरतापूर्वक युद्ध किया और कैकेयी ने उनके रथ का संचालन किया। जिससे महाराज दशरथ बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने कैकेयी से वर माँगने को कहा। समय पाकर चारों रानियों को चार पुत्र उत्पन्न हुए। कौशल्या ने राम, सुमित्रा ने लक्ष्मण, कैकेयी ने भरत और सुप्रभा ने शत्रुघ्न को जन्म दिया।

सीता का जन्म (२६-३० पर्व)—राजा जनक के यहाँ सीता नामक पुत्री और भामण्डल नामक पुत्र ने जन्म लिया। पूर्वजन्म की शत्रुता के कारण किसी विद्याधर कुमार ने भामण्डल का अपहरण किया और उसे वन में छोड़ दिया। इस कुमार का लालन-पालन चन्द्रगति नामक विद्याधर ने किया। नारद किसी कारणवश सीता से रुष्ट हो गये और उसका एक सुन्दर चित्रपट तैयार कर भामण्डल को भेंट किया। भामण्डल सीता के सुन्दर रूप को देखते ही आसक्त हो गया और विद्याधरों सहित मिथिला पर आक्रमण कर दिया, पर मनोहर नगर और वाटिका को देखते ही उसे जातिस्मरण हो गया और उसे यह ज्ञात हो गया कि सीता उसकी सहोदरा है। अतएव उसने जनक के समक्ष अपना परिचय प्रस्तुत किया तथा उन्हें सीता का स्वयंवर करने का परामर्श दिया। स्वयंवर में वज्रावर्त धनुष को चढ़ाने की शर्त रखी गयी। अन्य राजाओं

के असमर्थ रहने पर राम ने इस धनुष को चढ़ाया और सीता के साथ उनका विवाह सम्पन्न हुआ।

राम के बड़े होने पर दशरथ को संसार से विरक्ति हो गयी और वे राम को राजा बनाकर स्वयं मुनिदीक्षा ग्रहण करने की तैयारी करने लगे। जब कैकेयी को यह समाचार ज्ञात हुआ, तो उसने अपने सुरक्षित वर को माँग लिया, जिसके अनुसार भरत को अयोध्या का राज्य और राम को वनवास दिया गया।

३. वनभ्रमण

(क) राम का वनवास (४१ वाँ पर्व)—राम लक्ष्मण और सीता के साथ दक्षिण दिशा की ओर चल दिये। मार्ग में कितने ही त्रस्त राजाओं का अभयदान द्वारा उद्धार किया। कैकेयी और भरत वन में जाकर राम को लौट आने का अनुरोध करने लगे, पर पिता की इच्छा के विरुद्ध कार्य करना राम ने स्वीकार नहीं किया।

(ख) युद्धों का वर्णन (४२ वाँ पर्व)—राम-लक्ष्मण ने यहाँ पर अनेक शत्रुओं, धर्मविरोधियों, पापियों और अन्यायों अत्याचारियों को सही मार्ग पर न आने के कारण यमलोक भेज दिया। राजा वज्रकर्ण को सिंहोदर के चक्र से बचाया, बालखिल्य को म्लेच्छ के कारागार से मुक्त किया एवं भरत का विरोध करने वाले अतिवीर्य का नर्तकी का वेशधारण कर लक्ष्मण ने उसका मान खण्डित किया। लक्ष्मण का अनेक राजकुमारियों के साथ विवाह हुआ। दण्डक वन में निवास करते हुए राम-लक्ष्मण ने मुनि को आहारदान दिया और जटायु नामक वृद्ध तपस्वी से सम्पर्क स्थापित किया।

(ग) शम्बूकमरण एवं खरदूषण से युद्ध (४३-४४ पर्व)-सूर्यहास नामक तलवार को पाने हेतु खरदूषण का पुत्र शम्बूक तपस्या कर रहा था, किन्तु भ्रमवश बाँसों के भिड़े में छिपे हुए शम्बूक का लक्ष्मण द्वारा अस्त्र परीक्षा से मरण हो गया। विलाप करती हुई उसकी माता चन्द्रनखा लक्ष्मण के रूप से मोहित होकर कामतृप्ति की भिक्षा माँगने लगी किन्तु उसमें असफलता देख, पति से लक्ष्मण पर बलात्कार का दोषारोपण कर युद्ध करने का अनुरोध किया। दोनों पक्षों में भयंकर युद्ध हुआ, खरदूषण आदि अनेक राक्षस यमपुरी पहुँचा दिये गये।

४. सीताहरण और अन्वेषण (४५-५५ पर्व)—अपने बहनोई की सहायता करने के हेतु आया हुआ रावण सीता के अनिन्द्य लावण्य को देखकर मोहित हो गया। उस समय राम-लक्ष्मण बाहर गये हुए थे। अतः बलात् उसका अपहरण कर, अपने पुष्पक विमान में बैठाकर लंका की ओर चल दिया। मार्ग में जटायु एवं रत्नजटी नामक विद्याधरों से युद्ध करना पड़ा, पर इस युद्ध में रावण की ही विजय रही।

राम जब युद्ध समाप्त कर वापस लौटे तो कुटिया को सीता से शून्य देखकर विलाप करने लगे। राम ने अपने कार्य के सिद्ध्यर्थ वानरवंशी राजा सुग्रीव से मित्रता की और उनकी सहायता से सीता का पता लगाया।

५. युद्ध (५६-७८ पर्व)—सुग्रीव आदि विद्याधरों की सहायता से राम की समस्त सेना आकाशमार्ग द्वारा लंका पहुँच गयी और राम ने भयंकर युद्ध आरम्भ किया। सर्वप्रथम राम ने रावण के पास संधि का प्रस्ताव भेजा, पर उसने उसे अस्वीकार कर दिया। रावण के अनैतिक व्यवहार से दुःखी होकर विभीषण

भी राम से आकर मिल गया और राम ने विभीषण को लंका का राज्य देने का संकल्प कर लिया। दोनों ओर से भयंकर युद्ध हुआ और अन्त में पाप पर पुण्य की विजय हुई। राम ने रावण का वध कर पृथ्वी को निष्कंटक बनाया।

६. उत्तरचरित

(क) राज्यों का वितरण एवं सीतात्याग (७९-१०३ पर्व)—रावण की मृत्यु के पश्चात् राम-लक्ष्मण ने लंकावासियों को आश्वासन दिया और युद्ध से अस्त-व्यस्त लंका की स्थिति को सम्भाला। अनन्तर अयोध्या लौट आने पर अपने राज्य का समुचित बँटवारा किया।

समय पाकर सीता गर्भवती हुई किन्तु दुर्भाग्य से रावण के यहाँ निवास करने के कारण प्रजा द्वारा निन्दा होने से, राम ने सीता का निर्वासन कर दिया। सीता वन-वन भ्रमण करने लगी, उसने वज्रजंघ के यहाँ लव और कुश को जन्म दिया।

(ख) अग्नि परीक्षा (१०४-१०९ पर्व)—दिग्विजय के समय लव और कुश का राम-लक्ष्मण के साथ घनघोर युद्ध हुआ। नारद ने उपस्थित होकर राम-लक्ष्मण को लव और कुश का परिचय कराया। अग्नि परीक्षा द्वारा सीता की शुद्धि की गयी। सीता के शील के प्रभाव से अग्नि का दहकता कुण्ड शीतल जल बन गया। राम ने सीता से पुनः गृहावास में सम्मिलित होने का अनुरोध किया, पर सीता ने अनुरोध को ठुकरा दिया और आर्यिका का व्रत ग्रहण कर लिया तथा तपश्चरण द्वारा बारहवे स्वर्ग का लाभ किया।

नारायण और बलभद्र के प्रेम-सौहार्द की चर्चा स्वर्गलोक तक व्याप्त हो गयी। अतएव परीक्षार्थ दो देव अयोध्या आये और लक्ष्मण से राम के मरण का असत्य समाचार कहा। लक्ष्मण सुनते ही निष्प्राण हो गये, इस समाचार से राम अत्यन्त दुःखित हुए और लक्ष्मण के मोह में उनके शव को लिये हुए छह मास तक घूमते रहे। अन्त में कृतान्तवक्र के जीव ने, जो स्वर्ग में देव हुआ था, राम को समझाया। राम ने लक्ष्मण के शव की अन्त्येष्टि क्रिया की और राम जिनदीक्षा लेकर तपश्चरण द्वारा मोक्ष पधारे।

समीक्षा

इस कथावस्तु में घटनाओं और आख्यानों का नियोजन बड़े ही सुन्दररूप में किया गया है। चरित-काव्य की सफलता के लिए कथानक का जैसा गठन होना चाहिए वैसा इस ग्रन्थ में उपलब्ध है। कालक्रम से विशृंखलित घटनाओं को रीढ़ की हड्डी के समान दृढ़ और सुसंगठित रूप में उपस्थित किया है। राम की मूलकथा के चारों ओर अन्य घटनाएँ लता के समान उगती, बढ़ती और फैलती हुई चली हैं। कथानकों का उतार-चढ़ाव पर्याप्त सुगठित है। पात्रों के भाग्य बदलते हैं। परिस्थितियाँ उन्हें कुछ से कुछ बना देती हैं। वे जीवन संघर्ष में जूझकर घर्षणशील रूप की अवतारणा करते हैं। निस्संदेह रविषेण ने कथानक सूत्रों को कलात्मक ढंग से संजोया है।

पद्मचरित की कथावस्तु में निम्नलिखित तत्त्व उपलब्ध हैं—

(क) योग्यता

(ख) अवसर

(ग) सत्कार्यता

(घ) रूपाकृति

योग्यता

कथानक को अनुकूल या प्रतिकूल परिस्थितियों की ओर मोड़ना योग्यता के अन्तर्गत आता है। रावण द्वारा ''दशरथ-जनक-संतति विनाश का कारण होगी'' ऐसी शंका होने पर उनके विनाश की योजना, साहसगति विद्याधर द्वारा सुग्रीव का वेष बनाकर उसके राज्य पर आधिपत्य करना, राम के वनवास में छाया के समान लक्ष्मण द्वारा भाई की सेवा करना आदि प्रसंगों के गठन में कवि ने योग्यता तत्त्व का समावेश किया है। रावण का राम-लक्ष्मण को बलिष्ठ समझ अपने भाई एवं पुत्रों के बन्दी होने पर विजय-प्राप्त्यर्थ बहुरूपिणी विद्या को सिद्ध करने के लिए प्रस्तुत होना कथानक को प्रतिकूल से अनुकूल परिस्थितियों की ओर मोड़ना है। इसी प्रकार अग्निपरीक्षा में अग्नि-कुण्ड का जल-कुण्ड होना भी योग्यतातत्त्व के अन्तर्गत है।

अवसर

रसपुष्टि के लिए यथासमय रसमय प्रसंग या सन्दर्भों का प्रस्तुतिकरण कथानक नियोजन में अवसरतत्त्व है। पवनंजय विलाप करती हुई अंजना पर दृष्टिपात भी नहीं करता है, किन्तु सूर्यास्त के समय पतिवियोग में विलपती हुई चकवी को देखकर अंजना की मानसिक स्थिति का अनुमान लगा, पवनंजय का युद्ध के लिए जाते हुए मार्ग में से लौट आना अवसरतत्त्व के अन्तर्गत है। इसी प्रकार भरत द्वारा राम से राज्य करने का आग्रह करने पर भी राम की अस्वीकृति के कारण उन्हीं की आज्ञा से निश्चित समय तक राज्य स्वीकार करना भी कथानक का अवसरतत्त्व है। रथनूपुर के मायामयी परकोटे को तोड़ने के लिए नलकूवर की पत्नी का प्रसाधन भी अवसरतत्त्व के अन्तर्गत है।

सत्कार्यता

सत्कार्यता से तात्पर्य इस प्रकार से संदर्भों के संयोजन से है, जो स्वतन्त्ररूप में अपना अस्तित्व रखकर प्रसंग गर्भत्व को प्राप्त हो किसी कार्यविशेष की अभिव्यंजना करते हैं। रावण द्वारा विद्यासिद्धि हेतु तपस्या करना, देवों का उपद्रव कर उसको अपने लक्ष्य से विचलित करने का प्रयत्न करना, दशरथ द्वारा कैकेयी को स्वयंवर में प्राप्त कर युद्ध में सहयोग देने पर वर प्रदान करना आदि प्रसंग स्वतन्त्र होते हुए भी मूलकथानक में गर्भित होकर कार्यविशेष की अभिव्यंजना कर रहे हैं।

रूपाकृति

कथावस्तु में इतिवृत्त का वस्तुव्यापारों के साथ उचित एवं संतुलितरूप में नियोजन द्वारा रूपाकृति उपस्थित करना, रूपाकृति नामक तत्त्व है। मूल कथानक के साथ अवान्तर कथाओं का संमिश्रण अंग-अंगीभाव द्वारा करना ही इस तत्त्व का कार्य है। कवि कथावस्तु का विस्तार न करके छोटी-छोटी कथाओं द्वारा भी रूपाकृति तत्त्व का नियोजन कर सकता है। 'पद्मचरितम्' में राम-लक्ष्मण वन में निवास करते

हैं, लक्ष्मण द्वारा शम्बूक का वध हो जाता है। शोकाकुलिता उसकी माता चन्द्रनखा राम-लक्ष्मण को देखकर मोहित हो, अभिलाषा की पूर्ति न होने पर रुष्ट हो जाती है और अपने पति से उल्टा-सीधा भिड़ा देती है। इस प्रकार की अवान्तर कथाएँ पद्मचरित में कई दशक हैं। इन अवान्तर कथाओं का वस्तुव्यापारों के साथ अंग-अंगीभाव से संयोजन किया गया है। अतएव रूपाकृतितत्त्व का पूर्ण समावेश हुआ है।

रविषेण ने कथा-वस्तु के साथ वानरवंश, राक्षसवंश आदि की व्याख्याएँ भी बुद्धिसंगत की हैं। निःसन्देह कवि का यह ग्रन्थ प्राकृत 'पउमचरिउ' पर आधृत होने पर भी कई मौलिकताओं की दृष्टि से अद्वितीय है।

वानरवंश की उत्पत्ति के सम्बन्ध में बाल्मीकि ने लिखा है कि ब्रह्मा का निर्देश पाकर अनेक देवताओं ने अप्सराओं, यक्ष, ऋक्ष, नागकन्याओं, किन्नरियों, विद्याधरियों एवं वानरियों के संयोग से सहस्त्रों पुत्र उत्पन्न किये। माता-पिता के प्राकृतिक गुणों से युक्त होने के कारण ये स्वभावतः साहसी, पराक्रमी, धर्मात्मा, न्यायनीतिप्रिय एवं तेजस्वी हुए। ब्रह्मा से जामवान, इन्द्र से बालि, सूर्य से सुग्रीव, विश्वकर्मा से नल, अग्नि से नील, कुबेर से गन्धमादन, बृहस्पति से तार, अश्वनीकुमारों से मयन्द और द्विविन्द, वरुण से सुषेण एवं वायु से हनुमान की उत्पत्ति हुई।

रविषेण के मतानुसार देवताओं से वानरों की उत्पत्ति नहीं हुई है, न वानर और देवताओं का शारीरिक संयोग सम्बन्ध ही सिद्ध होता है। अतः ब्रह्मा, इन्द्र, सूर्य, विश्वकर्मा, नल, अग्नि, कुबेर, वरुण, पवन आदि तत्तद् नामधारी मानव-व्यक्ति-विशेष हैं। इन व्यक्ति-विशेषों से ही वानरजाति के व्यक्ति पैदा हुए हैं।

रविषण के मत में वानर एक मानवजाति विशेष है। जिन विद्याधर राजाओं ने अपना ध्वज-चिह्न वानर अपना लिया था, वे विद्याधर राजा वानरवंशी कहलाने लगे। वानर पशु नहीं हैं, मनुष्य हैं जो विद्याधरों या भूमिगोचरियों के रूप में वर्णित हैं। इस प्रकार रविषेण ने बाल्मीकि द्वारा कल्पित पशुजाति का मानवीकरण किया है।

इसी प्रकार राक्षसवंश के सम्बन्ध में भी रविषेण की मान्यता बाल्मीकि से भिन्न है। रविषेण ने जिस प्रकार वानरद्वीप निवासियों को वानरवंशी माना है, उसी प्रकार राक्षसद्वीप वासियों को राक्षसवंशी कहा है। बताया है कि विजयार्द्ध के पश्चिम में एक द्वीप है, जहाँ विद्याधर राजाओं का निवास है। उस द्वीप का नाम राक्षस द्वीप है। अतः वहाँ के निवासी राक्षस कहलाने लगे हैं। अमराख्य और भानुराख्य नामक तेजस्वी राजाओं की परम्परा में मेघवाहन नामक पुत्र ने जन्म लिया। इसके राक्षस नामक पुत्र उत्पन्न हुआ, जो अत्यन्त प्रभावशाली एवं स्वयशाभिलाषी हुआ। इस राक्षस राजा से प्रवर्तित वंश राक्षसवंश कहलाने लगा। ये राक्षस जनसाधारण की रक्षा करते थे, इसलिए भी राक्षस कहलाने लगे। अतएव रावण को राक्षस मानना भूल है। ये सम्भ्रान्त मानव थे, राक्षस नहीं। इस प्रकार कवि ने राक्षस और वानरवंश की विशिष्ट व्याख्याएँ प्रस्तुत की हैं।

वर्धमान जिनेन्द्र के द्वारा कहा हुआ यह अर्थ इन्द्रभूति नामक गौतम गणधर को प्राप्त हुआ। तत्पश्चात् धारिणी के पुत्र सुधर्माचार्य को। तदनन्तर प्रभव को और पश्चात् श्रेष्ठ वक्ता कीर्तिधर आचार्य

को उक्त अर्थ प्राप्त हुआ। आचार्य रविषेण ने इन्हीं कीर्तिधर आचार्य के वचनों का अवलोकन कर, इस 'पद्मचरितम्' की रचना की है।

यहाँ यह विचारणीय है कि पद्य में आया हुआ कीर्तिधर आचार्य कौन हैं और उनके द्वारा रामकथा सम्बन्धी कौन-सा काव्य लिखा गया है ? जैन साहित्य के आलोक में उक्त प्रश्नों का उत्तर प्राप्त नहीं होता है। श्रीनाथूरामजी प्रेमी ने इस ग्रन्थ की रचना प्राकृत 'पउमचरिउ' के आधार पर मानी है। अतः संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि यह एक सफल काव्य है, जिसकी रचना कवि आचार्य रविषेण के द्वारा की गयी है।

भूगोल की दृष्टि से भी यह ग्रन्थ अत्यधिक उपयोगी है। इसमें सृष्टि को अनादिनिधन बताया गया है और उत्सर्पण एवं अवसर्पण काल में होने वाली वृद्धि-हानि का कथन आया है। युगमान का वर्णन प्रायः 'तिलोयपण्णत्ति' के समान है। भोगभूमि और कर्मभूमि की व्यवस्था भी उसी के समान वर्णित है। बताया है कि भोगभूमि के पर्वत अत्यन्त ऊँचे, पाँच प्रकार के वर्णों से उज्ज्वल, नाना प्रकार की रत्नों की कान्ति से व्याप्त एवं सर्वप्राणियों को सुखोत्पादक होते हैं। नदियों में मगरमच्छ आदि नहीं रहते, पर कर्मभूमि में यह व्यवस्था परिवर्तित हो जाती है।

साभार : तीर्थंकर महावीर और उनकी आचार्य परम्परा, भाग-२

अनुक्रमणिका

सर्ग	विषय	पृष्ठ
१.	मंगलाचरण एवं भूमिका	१
२.	राजा श्रेणिक और उनकी चिन्ता	६
३.	विद्याधर लोक का वर्णन	१९
४.	युग प्रवक्ता भगवान् ऋषभनाथ का वैभव	३५
५.	राक्षस वंश की उत्पत्ति एवं निरूपण	४१
६.	वानरवंश उत्पत्ति विस्तार	५९
७.	इन्द्र व रावण (दशानन) का जन्म एवं रावण आदि तीनों भाईयों को विद्या सिद्धि	८४
८.	दशानन को मंदोदरी एवं अन्य रानियों की प्राप्ति एवं दिग्भ्रमण	१००
९.	बाली की अखण्ड प्रतिज्ञा, दीक्षा लेना और रावण द्वारा उपसर्ग बाद में भक्ति करना और बाली मुनि का निर्वाण	१२४
१०.	सुग्रीव को सुतारा की प्राप्ति एवं राजा सहस्त्ररश्मि एवं अनरण्य का दीक्षा लेना	१३४
११.	मिथ्या यज्ञ की उत्पत्ति, नारद की उत्पत्ति एवं रावण द्वारा राजा मरुत्व के मिथ्या यज्ञ का ध्वस्त करना	१४२
१२.	रावण द्वारा इन्द्र पर विजय प्राप्ति	१६१
१३.	विद्याधर इन्द्र का वैराग्य और दीक्षा धारण करना	१७७
१४.	अनंतबल केवली का धर्मोपदेश	१८२
१५.	पवनंजय और अंजना का विवाह	१९८
१६.	२२ वर्ष बाद पवनंजय और अंजना का मिलाप	२०८
१७.	सास द्वारा अंजना का घर से निकाला जाना एवं वीर हनुमान का जन्म	२१९
१८.	पवनंजय एवं अंजना का पुनः मिलन	२३७
१९.	रावण का निष्कंटक साम्राज्य	२४३
२०.	तीर्थंकर, चक्रवर्ती, बलभद्र, नारायण आदि का निरूपण	२५०
२१.	भगवान् मुनिसुव्रतनाथ, वज्रबाहु एवं राजा कीर्तिधर का महत्त्व वर्णन	२६१
२२.	सुकौशल स्वामी का जीवन चरित्र एवं दशरथ का जन्म	२६९
२३.	विभीषण द्वारा राजा दशरथ एवं जनक को मारने का षड्यंत्र	२७७
२४.	कैकेयी का कौशल एवं राजा दशरथ के साथ विवाह	२८०
२५.	राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न का जन्म	२८६
२६.	सीता और भामण्डल की उत्पत्ति और उनके पूर्वभव	२८९
२७.	म्लेच्छों की पराजय	२९७
२८.	सीता स्वयंवर	३०१
२९.	दशरथ का वैराग्य	३१४

३०.	भामण्डल और परिजनों का मिलन	३२०
३१.	पूर्व भव जानकर राजा दशरथ को वैराग्य	३२८
३२.	राम वनवास एवं भरत राज्याभिषेक	३४२
३३.	राजा वज्रकर्ण की प्रतिज्ञा	३५२
३४.	राम लक्ष्मण द्वारा राजा बालखिल्य को बन्धन मुक्त	३६५
३५.	कपिल का हृदय परिवर्तन	३७०
३६.	वनमाला और लक्ष्मण का मिलन	३७८
३७.	राजा अतिवीर्य का दीक्षा ग्रहण	३८३
३८.	जितपद्मा का स्वयंवर	३९०
३९.	कुलभूषण देशभूषण केवली का व्याख्यान	३९६
४०.	रामगिरि का वर्णन	४०६
४१.	जटायु और उसके पूर्व भव	४०७
४२.	दण्डक वन में निवास	४१५
४३.	शम्बूक वध	४२०
४४.	सीताहरण एवं राम विलाप	४२६
४५.	सीता के वियोग से दुखी राम	४३५
४६.	रावण की माया के विविध रूप	४३९
४७.	विट सुग्रीव का वध	४५०
४८.	लक्ष्मण द्वारा कोटिशिला उठाना	४५८
४९.	हनुमान का लंका के लिये प्रस्थान	४६८
५०.	राजा महेन्द्र का मान खण्डन	४७४
५१.	राम को गंधर्व कन्याओं की प्राप्ति	४७६
५२.	हनुमान को लंका सुंदरी की प्राप्ति	४७९
५३.	हनुमान द्वारा लंका को तहस-नहस करना	४८२
५४.	लंका के लिये प्रस्थान	४९६
५५.	विभीषण का राम से मिलन	५००
५६.	रावण की सेना का प्रमाण	५०४
५७.	रावण की सेना का लंका से बाहर निकलना	५०५
५८.	हस्त-प्रहस्त का वध	५०८
५९.	हस्त-प्रहस्त और नल-नील के पूर्वभव	५१०
६०.	राम-लक्ष्मण के सिंहवाहिनी गरुड़वाहिनी विद्या की प्राप्ति	५१२
६१.	सुग्रीव और भामण्डल का नागपास बंधन से मुक्त होना	५१८
६२.	लक्ष्मण को शक्ति लगना	५१९

६३.	राम विलाप	५२३
६४.	विशल्या के पूर्वभव	५२५
६५.	लक्ष्मण का शक्ति रहित होना	५३०
६६.	रावण के दूत द्वारा राम को कुटिल संदेश	५३४
६७.	शांतिनाथ जिनालय का वर्णन	५३८
६८.	अष्टाह्निका की महिमा	५३९
६९.	रावण का विद्या साधन	५४१
७०.	लंका में हाहाकार	५४१
७१.	रावण को बहुरूपणी विद्या की सिद्धि	५४६
७२.	रावण का युद्ध संबंधी निश्चय	५५०
७३.	महाप्रयाणी	५५४
७४.	रावण और लक्ष्मण का युद्ध	५६२
७५.	लक्ष्मण के चक्ररत्न की उत्पत्ति	५६७
७६.	रावण का वध	५७०
७७.	प्रीतिंकर का उपाख्यान	५७२
७८.	इन्द्रजित् आदि की दीक्षा	५७५
७९.	सीता का समागम	५८१
८०.	मय मुनि का वर्णन	५८४
८१.	विद्याधरों द्वारा अयोध्या को सजाना	५९३
८२.	राम लक्ष्मण का अयोध्या में प्रवेश	५९८
८३.	त्रिलोकमंडन हाथी द्वारा उपद्रव	६०२
८४.	त्रिलोकमंडन हाथी का शांत होना	६०८
८५.	भरत तथा त्रिलोकमंडन हाथी के पूर्वभव	६१०
८६.	भरत और कैकेयी की दीक्षा	६१८
८७.	भरत का निर्वाण	६१९
८८.	राम-लक्ष्मण का राज्याभिषेक	६२०
८९.	राजा मधु का वध	६२२
९०.	मथुरा पर उपसर्ग	६२७
९१.	शत्रुघ्न के पूर्वभव	६२९
९२.	मथुरा में सप्तर्षि के प्रभाव से उपसर्ग का नष्ट होना	६३१
९३.	लक्ष्मण को मनोरमा की प्राप्ति	६३५
९४.	राम-लक्ष्मण की विभूति	६३८
९५.	सीता को दोहला	६३९

९६.	लोकनिंदा की चिन्ता	६४१
९७.	सीता का निर्वासन वज्रजंघ का आगमन	६४५
९८.	वज्रजंघ द्वारा सीता को सान्त्वना देना	६५५
९९.	राम का शोक	६६०
१००.	लवणांकुश की उत्पत्ति	६६६
१०१.	लवणांकुश की दिग्विजय	६७०
१०२.	राम-लक्ष्मण और लवणांकुश का युद्ध	६७५
१०३.	लवणांकुश का राम लक्ष्मण के साथ मिलाप	६८४
१०४.	सकलभूषण केवली का ज्ञानोत्सव	६८९
१०५.	सीता की अग्नि परीक्षा, दीक्षा	६९५
१०६.	रामदेव के पूर्व भवों का वर्णन	७०८
१०७.	कृतांतवक्र की दीक्षा	७१९
१०८.	लवणांकुश के पूर्वभव	७२२
१०९.	राजा मधु के पूर्व भव	७२५
११०.	लक्ष्मण के आठ कुमारों का दीक्षा लेना	७३३
१११.	भामण्डल का परलोक गमन	७३७
११२.	हनुमान का वैराग्य	७३८
११३.	हनुमान का निर्वाण	७४३
११४.	इन्द्र और देवों के बीच हुई चर्चा	७४४
११५.	लक्ष्मण का मरण	७४७
११६.	श्रीराम देव का विलाप	७५२
११७.	विभीषण द्वारा सम्बोधन	७५४
११८.	लक्ष्मण का अंतिम संस्कार	७५६
११९.	राम बलदेव की दीक्षा	७६२
१२०.	श्रीराम मुनि का आहार न होने से नगरी में क्षोभ	७६५
१२१.	श्रीराम मुनि का आहार ग्रहण	७६७
१२२.	श्रीराम मुनि को केवलज्ञान	७६८
१२३.	श्री राम बलदेव को सिद्ध पद की प्राप्ति	७७२

❑ ❑ ❑

प्रथमानुयोग के ग्रन्थों में सबसे महत्त्वपूर्ण एवं लोकप्रिय ग्रन्थ है तो वह है आचार्य रविषेण विरचित सर्वज्ञदेव श्रीराम के चरित्र को बताने वाला पद्मपुराण (जैन रामायण)। इस ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद लोकप्रतिष्ठ, ख्याति प्राप्त, राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त विद्वान् डॉ. पं. पन्नालाल जैन, साहित्याचार्य ने किया है। इस ग्रन्थ में 800 पृष्ठ हैं, जिसमें 25 चित्र भी लगे हैं। बड़े अक्षरों में सुंदर, आकर्षक प्रिंटिंग के साथ धर्मोदय विद्यापीठ के द्वारा स्वाध्यायी श्रावकों के लिए जिसका प्रिंटेड मूल्य 350/- की जगह मात्र 250/- में उपलब्ध कराया जा रहा है। डाक खर्च 50/- सहित 300/- नीचे दिए paynow बटन पर क्लिक करके भुगतान कर घर बैठे ग्रन्थ प्राप्त करें।

पद्मपुराण (जैन रामायण) प्राप्त करने के लिए

https://jainsamaj.vidyasagar.guru/blogs/entry/838-padam-puran/